



पत्र-पुष्प



“स्व-उन्नति निमित्त शुभ प्रेरणायें, याद पत्र” (26-7-20)

विश्व रक्षक, परमपवित्र, परमप्यारे बापदादा के अति लाडले, सदा परमात्म छत्रछाया में रह, अपने दातापन के स्वरूप द्वारा सर्व आत्माओं को सेकण्ड में गति सद्गति का अधिकार प्राप्त कराने वाली निमित्त टीचर्स बहिनें तथा प्युरिटी की पर्सनैलिटी को धारण करने वाले सभी ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद के साथ रक्षाबंधन तथा जन्माष्टमी के पावन पर्व की हार्दिक शुभ कामनायें।

अभी तो राखी और जन्माष्टमी के यादगार पावन पर्व समीप आ रहे हैं। इस बार तो हर एक अलौकिक रीति से शुभ संकल्पों की सूक्ष्म राखी बांध, बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण बनने का दृढ़ संकल्प करेंगे। मीठे बाबा ने तो ब्राह्मण जन्म लेते ही “पवित्रता” की पक्की राखी बांध दी है। जब हम मन-वचन-कर्म से सम्पूर्ण पावन बनते हैं तब श्रीकृष्ण पुरी, वैकुण्ठ की नई दुनिया स्थापन होती है। भक्तों ने भी कितने सुन्दर अर्थ सहित यादगार बनाये हैं। रक्षाबंधन के बाद ही जन्माष्टमी का पावन पर्व धूमधाम से मनाते हैं। हम सबको तो खुशी है कि अब अपनी वह नई स्वर्णिम दुनिया आई कि आई।

द्रामानुसार अभी यह समय भी हम सबको विशेष स्वयं को बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण बनने के लिए मिला है। इसमें हर एक विशेष तपस्या द्वारा स्वयं को सर्व शक्तियों से सम्पन्न बना रहे हैं। मीठे बाबा ने विशेष वरदान में कहा है बच्चे, अब अन्तिम सीज़न की तैयारी करो। उसके लिए पुरुषार्थी के बजाए सर्व खजानों से सम्पन्न मास्टर दाता बनो, जो तड़फती हुई दुःखी अशान्त आत्माओं को सेकण्ड में गति-सद्गति का अधिकार दे सको। बोलो, ऐसा ही लक्ष्य रख विशेष जमा का खाता भरपूर कर रहे हो ना! इस रक्षाबंधन के पावन पर्व पर जरूर सभी अपने आपसे यही दृढ़ता भरा संकल्प करेंगे कि अब हमें मास्टर दाता बन हर आत्मा को कुछ न कुछ देना ही है। मीठे बाबा ने जो हम सबको इतनी ऊंची पालना दी है, उसका रिटर्न देने के लिए अपने फरिश्तेपन की स्थिति द्वारा समाधान स्वरूप बनना है। बाप समान उपकारी बन, भक्तों की पुकार सुन अपने फरिश्ते स्वरूप द्वारा समस्याओं से थकी हुई आत्माओं की थकावट दूर करनी है।

वर्तमान समय की नाजुक परिस्थितियों को देखते हुए किसी भी प्रकार की हलचल में नहीं आना है। बाबा ने हम सबको तीन बिन्दियों का तिलक लगाया है, इसलिए नथिंगन्यु। सिर्फ अपने अकालतख्त पर बैठ साक्षीदृष्टा की सीट से हर दृश्य को देखो तो सदा एकरस अचल अडोल स्थिति रहेगी। यह दृश्य ही हर एक के अन्दर बेहद की वैराग्य वृत्ति इमर्ज करेंगे और सृष्टि परिवर्तन का महान कार्य सम्पन्न होगा।

देखो, इस समय मधुबन के सभी स्थान सूक्ष्मवतन की भासना दे रहे हैं। सभी समर्पित भाई बहिनें अलग-अलग ग्रुप्स में बहुत अच्छी तपस्या कर रहे हैं, उसके वायब्रेशन तो आप सबके पास पहुंच ही रहे होंगे। बाकी आप सबकी तबियत ठीक होगी। सभी बाबा के बच्चों को अभी साकार व अव्यक्त मुरलियों का गहन अध्ययन करके, अपने मनोबल को बढ़ाना है, तब ही इस विश्व परिवर्तन के महान कार्य में हम अपनी शक्तिशाली मन्सा द्वारा सहयोगी बन सकेंगे।

अभी तो हम सबकी मीठी प्यारी दादी गुल्जार, मुम्बई गामदेवी सेवाकेन्द्र से अपनी सूक्ष्म मन्सा सकाश द्वारा सबकी पालना कर रही हैं। दादी की तरफ से भी विशेष राखी और जन्माष्टमी के पावन पर्व की पदमगुणा याद और मुबारक स्वीकार करना जी। अच्छा - सभी को याद....

ईश्वरीय सेवा में,
बी.के. रतनमोहिनी



ये अव्यक्त इशारे



“समर्पित होने के साथ-साथ सम्पूर्ण ट्रस्टी बनो”

1) भक्ति में जो वायदा किया था कि आप जब आयेंगे तो बलिहार जायेंगे। बलिहार जाना माना सब कुछ समर्पित कर बलवान बनना। मेरा-पन समाप्त। मेरा शरीर भी नहीं। अगर मेरा है तो देह भान आता है। तो देह भान के मेरेपन को सदा के लिए समाप्त करो। जैसे ब्रह्मा बाप और जगत अम्बा माँ ने अपना सब कुछ समर्पित किया, ऐसे फालो फादर मदर।

2) अपना तन-मन-धन सब सेवा में समर्पित करो। सेवा के सिवाए और कोई भी समस्याओं में नहीं जाओ। दान दो, वरदान दो तो स्व का ग्रहण स्वतः ही समाप्त हो जायेगा। अब सेवा का अविनाशी लंगर लगाओ क्योंकि समय कम है और सेवा आत्माओं की, वायुमण्डल की, प्रकृति की, भूत प्रेत आत्माओं की, सबकी करनी है इसलिए निरन्तर सेवाधारी बनो।

3) चाहे प्रवृत्ति में रहते हो या सेवाकेन्द्र पर रहते हो, अगर दिल का सच्चा सौदा किया है तो हर समय दिल से निकलेगा मेरा बाबा। सरेन्डर होना माना श्रीमत के अन्डर (अधीन) रहना। लौकिक कार्य करते भी सदा अपने को ट्रस्टी समझो। ट्रस्टी भी हैं और वारिस भी हैं। कहाँ भी रहते जो मन से समर्पित हैं वही वारिस हैं। मन में जरा भी मेरापन न हो। सरेन्डर माना कर्मबन्धन के भी अन्डर नहीं। अगर मन को कोई भी बन्धन खींचता है तो सरेन्डर नहीं कहेंगे।

4) निश्चयबुद्धि अर्थात् बलिहार जाने वाले, सर्व वंश सहित समर्पित। चाहे देह भान में लाने वाले विकारों का वंश, चाहे देह के सम्बन्ध का वंश, चाहे देह के विनाशी पदार्थों की इच्छाओं का वंश, सर्व वंश में यह सब आ जाता है। ऐसे सर्वन्श समर्पित वा सर्वन्श त्यागी बने हो ना! सेवा अर्थ अपने को अर्पण करते हो लेकिन ‘सर्वन्श अर्पित’ हो - यही मंजिल है।

5) जैसे ब्रह्मा बाप ने हिम्मत का पहला कदम यही उठाया जो सब कुछ समर्पण किया। कुछ सोचा नहीं कि क्या होगा, कैसे होगा। एक सेकण्ड में बाप की श्रेष्ठ मत प्रमाण बाप ने ईशारा दिया, बाप का इशारा और ब्रह्मा का कर्म वा कदम। तन को भी समर्पण किया, मन को भी सदा मन्मनाभव की विधि से सिद्धि-स्वरूप बनाया। भविष्य की कोई चिंता किये बिना निश्चिन्त बन धन को भी समर्पित किया। लौकिक सम्बन्ध को अलौकिक सम्बन्ध में परिवर्तन किया। छोड़ा नहीं, कल्याण किया, परिवर्तन किया। ऐसे फालो फादर करो।

6) मैं-पन की बुद्धि, अभिमान की बुद्धि को समर्पित कर तन, मन, बुद्धि से निर्मल, शीतल सुखदाई बनो तो सदा निश्चित रहेंगे। अगर अपनी बुद्धि चलाते हो कि पता नहीं क्या होगा, भूखे तो नहीं रह जायेंगे, यह तो नहीं होगा, वह तो नहीं होगा - ऐसे व्यर्थ संकल्प वा संशय की मार्जिन होते हुए भी समर्थ संकल्प चलें कि सदा बाप रक्षक है, कल्याणकारी है। यह विशेषता है समर्पणता की।

7) समर्पित बुद्धि अर्थात् जहाँ चाहें, जब चाहें वहाँ मन-बुद्धि को स्थित कर लें। अगर कहते हो कि यह मेरा स्वभाव है, मेरी नेचर ऐसी है, न चाहते भी संकल्प चल जाते हैं, बोल निकल पड़ते हैं - तो इसको सर्वन्श समर्पित नहीं कहेंगे। सर्वन्श समर्पण करना माना मेरे को तेरे में परिवर्तन करना। बाप का स्वभाव सो मेरा स्वभाव, आत्मिक भाव। संस्कार सदा बाप समान स्नेह, रहम, उदारदिल के, जिसको बड़ी दिल कहते हो।

8) महाबलवान वही है जो सूक्ष्म देह-भान को भी समर्पित कर दे। देह भान का भी अंश नहीं रखना। अगर अंशमात्र भी रह गया तो बार-बार चुम्बक की तरह खींचता रहेगा। इतना स्व को समर्पण करो जो आपका वायुमण्डल, आपका वायुब्रेशन, आपका संग, आपके दिल का सहयोग, आपके दिल की दुआयें औरों को भी सहज परिवर्तन करने में सहयोग दें।

9) इस शरीर को भी एक अमानत समझो। तो देह की ममता खत्म हो जायेगी। जैसे ट्रस्टी हो रहने से, अमानत समझने से ममता कम होती है। इसी रीति यह शरीर भी सिर्फ ईश्वरीय सर्विस के लिए अमानत के रूप में मिला हुआ है, जिसकी अमानत है उनकी स्मृति, अमानत को देखकर स्वतः आती है। यह अमानत रूहानी बाप ने दी है, तो रूहानी बाप की याद रहेगी और अमानत समझने से रूहानियत रहेगी, रूहानियत से बुद्धि सदैव राहत में रहेगी फिर थकावट नहीं होगी।

10) दुनिया में भी हर चीज़ को सम्भालने के लिए ट्रस्टी मुकरर किये जाते हैं। तो आपको भी यह हृद की रचना बाप-दादा ने ट्रस्ट बनाकर सम्भालने के लिए दी है, यह मेरी रचना नहीं लेकिन बाप-दादा द्वारा ट्रस्टी बन इसको सम्भालने के लिए निमित्त बना हुआ हूँ। ट्रस्टीपन में मेरापन नहीं रहेगा। ट्रस्टी निमित्त होता है। प्रवृत्ति मार्ग की वृत्ति भी ना हो। यह ईश्वरीय आत्मायें हैं ना कि मेरे बच्चे हैं।

11) आप मरजीवा बच्चे अपने तन के भी ट्रस्टी हो, मन अर्थात् संकल्प के भी ट्रस्टी हो, लौकिक व अलौकिक जो प्रवृत्ति मिली है उसमें भी ट्रस्टी हो। ट्रस्टी के बजाय गृहस्थी नहीं बनना। गृहस्थी की दुर्दशा का तो मॉडल कैसा बनाते हैं! सभी तरफ से खिंचा हुआ रहता है, दूसरा गृहस्थी को गधे के रूप में, अनेक प्रकार के बोझ वाला मॉडल बनाते हैं। तो जब गृहस्थी बन जाते हो तो मेरे-पन के अनेक प्रकार के बोझ आ जाते हैं। सबसे रॉयल रूप का बोझ है, यह तो मेरी जिम्मेवारी है, इसको तो निभाना ही पड़ेगा।

12) कभी भी अपनी कर्मेन्द्रियों के वश हो अनेक रसों में समय गँवाने वाले गृहस्थी नहीं बनो। आज कन-रस, कल जीभ-रस वश समय गँवाया। ऐसे गृहस्थी में फंसने के कारण ट्रस्टीपन भूल जाते हो। ट्रस्टी, मालिक के बिगर किसी भी वस्तु को अपने प्रति यूज़ नहीं कर सकते तो कर्मेन्द्रियों के रस में मस्त हो जाना, उसको भी

गृहस्थी कहेंगे, न कि ट्रस्टी, क्योंकि श्रेष्ठ से श्रेष्ठ मालिक जिसके आप ट्रस्टी हो उनकी श्रीमत एक के रस में सदा एकरस स्थिति में रहने की है। तो इन कर्मन्द्रियों द्वारा एक का ही रस लेना है।

13) हृद की प्रवृत्ति को सम्भालते हुए ईश्वरीय सेवा अर्थ अपने को ट्रस्टी समझ करके प्रवृत्ति का कार्य करो। हर कर्म श्रीमत प्रमाण हो – उसमें जरा भी मनमत या परमत मिक्स न करो। श्रीमत में अगर जरा भी मनमत या परमत मिक्स की तो जैसे शुद्ध चीज़ में कोई अशुद्ध चीज़ मिक्स होने से कितना नुकसान हो जाता है। यहाँ भी श्रीमत में मनमत या परमत मिक्स होती है तो सेवा से जो प्राप्ति होनी चाहिए वो नहीं होती। खुशी, सफलता, शक्ति का अनुभव भी नहीं होता।

14) व्यर्थ संकल्प मिटाने का आधार है, गृहस्थीपन छोड़ना। चाहे कुमारी है वा कुमार है लेकिन मेरा स्वभाव, मेरा संस्कार, मेरी बुद्धि यह विस्तार गृहस्थीपन है। जो समर्पण हो गए तो जो बाप का स्वभाव, वह आपका स्वभाव। जो बाप का संस्कार, वह आपके संस्कार। जैसे बाप की दिव्य बुद्धि, वैसे आपकी। तो दिव्य बुद्धि में स्मृति न रहे, यह नहीं हो सकता।

15) ट्रस्टी का विशेष लक्षण, वह स्वयं को हर बात में हल्का, डबल लाइट अनुभव करेगा। शरीर के भान का भी बोझ न हो—इसको कहा जाता है ट्रस्टी। जब बाप के बने, तो तन-मन-धन सहित बाप के बन गये ना! सब बाप को दे दिया। ट्रस्टी अर्थात् मेरापन नहीं। जब मेरापन समाप्त हो जाता, तो लगाव भी समाप्त हो जाता। ट्रस्टी बन्धन वाला नहीं होता, वह सदा स्वतंत्र रहता है। किसी भी आकर्षण में परतंत्र होना भी ट्रस्टीपन नहीं। ट्रस्टी माना ही स्वतंत्र।

16) पवित्र प्रवृत्ति में व्यर्थ से निवृत्ति चाहिए। आपके बुद्धि की प्रवृत्ति है शुद्ध संकल्प, वाणी की प्रवृत्ति है बाप द्वारा जो सुना है वही सुनाना, कर्म की प्रवृत्ति है कर्मयोगी बन हर कर्म चरित्र रूप में करना। सम्पर्क की प्रवृत्ति है जो भी सम्पर्क में आये उसका सम्पर्क बाप से कराना। ऐसे पवित्र प्रवृत्ति वाले ट्रस्टी बनो। जब बुद्धि से समर्पित हो गये तो पुरानी दुनिया से लंगर उठ गया, हमारी स्टीम्बर चल दी, पीछे मुड़कर देख नहीं सकते। समर्पित होना माना युद्ध का मैदान छोड़ देना।

शिवबाबा याद है ?

ओम् शान्ति

मधुवन

“सिर्फ योग लगाने वाले योगी नहीं लेकिन योगी जीवन वाले बनो”

(दादी गुल्जार 14-12-99)

आज सारा दिन आप सभी ने विदेही अवस्था का अनुभव किया। क्योंकि यहाँ चारों ओर योग का वायुमण्डल है। उठते हैं, बैठते हैं कोई भी कर्म कर रहे हैं लेकिन सब योगी आत्मायें हैं। एक योगी वायुमण्डल पर अपना प्रभाव डालता है, यहाँ तो अनेक योगी हैं। वृत्ति से ही वायुमण्डल बनता है तो सभी ने यथाशक्ति यथा पुरुषार्थ अनुभव तो किया ही होगा क्योंकि बाबा हमको शुरू से ही कहते हैं कि आप योगी जीवन वाले हैं। योग तो भिन्न-भिन्न आत्मायें भी लगाती रहती हैं लेकिन हम सिर्फ योग लगाने वाले नहीं हैं, योगी जीवन वाले हैं। जीवन ही हमारी योगी है, तो जीवन सिर्फ दो घण्टे, चार घण्टे की नहीं है, जीवन निरन्तर है। तो जब योगी जीवन माना निरन्तर योग लगा हुआ ही है।

जब हम कहते हैं कि बाबा ही हमारा संसार है, तो हमारी बुद्धि और कहाँ जायेगी? और है ही क्या जहाँ बुद्धि जाये। भिन्न-भिन्न प्रकार से कहते हैं भगवान हमारा साथी है, बाबा ही हमारा संसार है, एक बाबा दूसरा न कोई, बाबा हमारे नयनों में समाया हुआ है... ऐसे भिन्न-भिन्न रूप से हम वर्णन करते हैं। तो जो वर्णन करते हैं, उसका स्वरूप बनें। उसी एक में ही एकाग्र हो जाएं। तो बाबा एक है, दूसरा है ही नहीं तो निरन्तर और स्वतः बुद्धि उस एक में ही

जायेगी, इससे योगी जीवन स्वतः बन जायेगी।

विदेही का अर्थ क्या है? देह में तो हम हैं ही, देह के बिना तो बोल भी नहीं सकते, लेकिन देह में होते हुए विदेही का अर्थ है, देह-भान हमारी बुद्धि को अपने तरफ खींचे नहीं। देह से कार्य कर रहे हैं लेकिन देह के भान में आकर कार्य नहीं करें। कर्मयोगी बनकर काम करें। वैसे भी आपको साधारण जीवन में अनुभव होगा कि कई बार काम एक कर रहे हैं लेकिन एक दो घण्टे में आप अपने को चेक करो तो बुद्धि कई जगह चक्कर लगाकर आती है। एक ही काम में नहीं होती है, बुद्धि चक्कर लगाकर दूसरा काम भी सोचने का कर रही है और हाथ-पांव से दूसरा कर्म भी कर रहे हैं। तो विदेही का अर्थ है कि देह में होते, कर्मयोगी बनते कर्म का बन्धन हमको खींचे नहीं। देह का भान हमको विदेही अवस्था से नीचे नहीं ले आये। विदेही माना देह के भान से न्यारे हो एक बाबा की याद में अच्छी तरह से रहना। ऐसे नहीं कभी बाबा याद आया, कभी पांव का दर्द याद आया, कभी एक दो का देखना याद आया.... कोई भी संकल्प हमको नीचे नहीं ले आवे।

जैसे कोई से बहुत प्यार हो और प्यार में कोई मगन हो। ऐसे बाबा के प्यार में मगन हो जाएं। एक होता है लगन लगाना, दूसरा

होता है लगन में मगन रहना तो योग लगाये नहीं, मेहनत नहीं करें लेकिन बाबा के प्यार में एकदम खोये हुए हों। जो बाबा की याद में एकदम खोये हुए होते हैं वह सब कुछ देखते हुए, चलते हुए भी लगन में मगन रहते हैं, उनके सामने कोई विघ्न नहीं आ सकता। लगन में मगन माना उसी तरफ उसकी बुद्धि जाती है, यहाँ वहाँ नहीं जाती है। कर्म करेगा लेकिन बाबा की याद में करेगा, मगन अवस्था में करेगा।

खास बाबा ने वर्तमान समय इसीलिए यह भट्टी का, मौन का प्रोग्राम रखवाया है क्योंकि हमारा सिर्फ मुख का मौन नहीं है, हमारा है मन का मौन। मन के मौन का अर्थ ही है मन शान्त रहे, यहाँ वहाँ हलचल में नहीं आवे क्योंकि मन का बोलना है मन की हलचल। तो मन के मौन का अर्थ ही है मन में कोई भी हलचल नहीं हो, अचल हो।

कर्मयोगी का अर्थ ही है कि मन अचल-अडोल रहे। कोई भी बात, संकल्प हमको डगमग न करे, अपनी ऊँची स्थिति से नीचे नहीं ले आवे। मन अचल हो, कोई व्यर्थ संकल्प की चंचलता मन में नहीं आये, इसको कहते हैं अचल-अडोल। जैसे तूफान आता है तो प्रकृति की हलचल है, उसमें जो मजबूत यानि ताकत वाले, बहादुर होते हैं, वह कितना भी तूफान होगा फिर भी अपने को सेफ रख सकते हैं। और जो कमजोर होगा वह तो हिल जायेगा। इफेक्ट में आ जायेगा। ऐसे कितने भी प्रकार की बातें हमको कोशिश करें चंचल बनाने की, अचल से नीचे लाने की लेकिन मन अचल रहे, वह उसका होगा जो स्वयं ताकत वाला होगा यानि जिनकी आत्मा पॉवरफुल होगी। तो आत्मा को पॉवरफुल बनाने के लिए, अचल अडोल बनाने के लिए बाबा हमको यह चान्स देता है क्योंकि अकेले में और संगठन का जो सहयोग मिलता है उसमें अन्तर होता है। वायुमण्डल का भी प्रभाव बहुत पड़ता है। अभी यहाँ तो वायुमण्डल ही योग का है तो योग का प्रभाव मन को मदद देता है।

हम कहते हैं आज मेरा मन बड़ा खुश है, जब मेरा है तो मैं मालिक हूँ, मालिक जैसे चाहे वैसे उसको चलाये। ऐसे नहीं हम बैठे तो योग में हैं, कोशिश बहुत की लेकिन मन पता नहीं कहाँ-कहाँ चला जाता है। अरे जब मेरा मन है तो मैं जहाँ चाहूँ वहाँ मन को लगाऊँ, न कि मन मेरे को जहाँ लगाने चाहे वहाँ खींचके ले जाये। तो हमारा पाठ है 'मैं और मेरे का'। तो मैं मालिक हूँ, उस लक्ष्य से अगर हम स्मृति स्वरूप होकर बैठते हैं तो मन को जहाँ मैं चाहूँ वहाँ लगा सकते हैं। मन एक चित हो करके रहे तो विदेही अवस्था सहज बन जाये, उसके लिए सिर्फ हमको बार-बार यह अटेन्शन देना पड़ेगा।

लौकिक जिम्मेवारी जो भी है वह तो सम्भालना ही है। बाबा की श्रीमत है प्रवृत्ति में रहो, सब कुछ करो लेकिन ट्रस्टी होकर करो। ट्रस्टी माना तेरा समझकर सम्भालना, अगर मेरा-मेरापन है तो बाबा उसको कहते हैं ट्रस्टी नहीं, गृहस्थी है।

तो सदा के लिए अपनी विदेही अवस्था बनाने के लिए निरन्तर यह अभ्यास चलता रहे, उसके लिए हमको बार-बार अपने ऊपर

अटेन्शन देना पड़े, चेक करना पड़े कि मेरा मन मेरे कन्ट्रोल में है? चेक करने में कितना टाइम लगता है - मैं मन के वश हूँ? या मन मेरे वश में है? अभी मेरे को कहने में भी एक सेकेण्ड से भी कम लगा और सोचने में तो उससे भी कम लगेगा। तो बीच-बीच में काम करते हुए भी अपने काम के हिसाब से नियम बनाना चाहिए। घण्टे के बाद सोचो, दो घण्टे के बाद सोचो, तीन घण्टे के बाद सोचो लेकिन बीच-बीच में सोचो जरूर। तो लिंक जुटा रहेगा, नहीं तो लिंक टूट जाता है। फिर टूटे हुए लिंक को जोड़ने में टाइम लगता है। और घड़ी-घड़ी लिंक टूटने की आदत भी पड़ जाती है। इसलिए बीच में एक सेकेण्ड भी चेकिंग करो और ऐसा कोई नहीं है, जिसको बीच में एक सेकेण्ड भी नहीं मिलता हो। कुछ भी कर रहे हो, चेकिंग तो मन की बात है, कर सकते हो। कोई कहते हैं कि दफ्तर में हम योग में बैठने की कोशिश करते हैं तो लोग कहते हैं, क्या कर रहे हो? काम कर रहे हो आंखे बन्द करके, यह क्या है! हमें तो आंखें भी बन्द नहीं करनी है यह तो मन की बात है, एक सेकेण्ड में चेकिंग करना है। उसमें उन्हीं को क्या पता, वैसे भी काम करते आप मन से पता नहीं कहाँ कहाँ घर में, काम में घूमकर आते हो। तो यह काम की बात है - चेक करना और चेंज करना। सिर्फ चेक भी नहीं करो क्योंकि कई हैं जो पोतामेल लिखते हैं परन्तु रिजल्ट में इतना अच्छा नहीं होता तो दिलशिकस्त हो जाते हैं।

फिर सोचते हैं कि मेरा योग तो लगता नहीं है, अभी दो साल हो गये हैं, ऐसा ही है, हम तो न यहाँ के रहे न वहाँ के रहे, इससे तो वहाँ भोगी ही ठीक है। नहीं। चेक करने का अर्थ है चेंज करना। सिर्फ चेकिंग करेंगे तो दिलशिकस्त बन जायेंगे। जब अच्छा होगा तो उस दिन बहुत खुश होंगे और थोड़ा खराब होगा तो सोच में पड़ जायेंगे, लेकिन सदा ही चेक के बाद चेंज करने का अभ्यास करते रहो तो वह निरन्तर हो जायेगा। चेन्ज करने की शक्ति हमको बाबा ने दे दी है बस, मन का मैं मालिक हूँ। मालिकपन के स्मृति में आना - यह है चेन्ज करना। चेक करना और चेन्ज करना तो ऐसा अभ्यास अगर हम बीच-बीच में बार-बार करते रहेंगे तो योग पॉवरफुल होता जायेगा क्योंकि लगातार होने से पॉवरफुल होता रहेगा। अगर टूटता-जुटता, टूटता-जुटता है तो वह पॉवरफुल नहीं होता है। और कई तो यही सोचते रहते हैं कि मैं शरीर नहीं हूँ, मैं आत्मा हूँ, मैं आत्मा हूँ... आत्मा हूँ तो उसमें टिक जाओ ना। आत्मा क्या है, आत्मा के गुण क्या हैं? आत्मा के ओरीजिनल संस्कार क्या हैं? उस स्मृति में रहो माना आत्म-अभिमानि बनो तो ऐसा अभ्यास अटेन्शन में रहने से सहज विदेही बन जायेंगे। ऐसे नहीं कोई बात सामने आई और मैं कोशिश करूँ, नहीं-नहीं मैं विदेही बन जाऊँ, अशरीरी बन जाऊँ... ऐसे ही थोड़ेही विदेही बनेंगे? अभ्यास चाहिए। तो जितना अभ्यास करते रहेंगे उतना वह नैचुरल रूप आता जायेगा। जैसे देह-भान में आने का बहुत समय का अभ्यास है। देह-भान नैचुरल हो गया है, उसके लिए आप योग लगाते हो क्या? नहीं, मैं देह हूँ, मैं देह हूँ, देही बनने की कोशिश करते हो, तो भी देह में आ जाते हो तो यह नैचुरल हो गया ना। वैसे नैचुरल देही-अभिमानि बनना इसी

को ही कहा जाता है पाँवरफुल योग। कई समझते हैं पता नहीं बाबा ज्योतिबिन्दु याद तो किया लेकिन दिखाई नहीं दिया, लाइट माइट कुछ अनुभव नहीं हुआ। तो लाइट दिखाई दे इसको योग नहीं कहा जाता है, बुद्धि द्वारा अनुभव होना, यह देखने से भी बड़ा अनुभव है। आपने देखा - आत्मा ज्योतिबिन्दु है, चमक रही है, सुन्दर है - मेरे भृकुटी के बीच में चमक रही है, बस। अब दिखाई तो एक सेकेण्ड देगी फिर? लेकिन बुद्धि द्वारा अनुभव जो होता है वह सदाकाल का होता है। मैं जो आत्मा बिन्दु हूँ, परमात्मा ज्योतिबिन्दु जो है जैसा है वैसा बुद्धि द्वारा अनुभव करना, वह देखने से भी ऊंचा है। इसलिए बीच-बीच में यह अभ्यास करते रहो। चलते-फिरते मैं शरीर नहीं हूँ लेकिन मैं आत्मा शरीर को चला रही हूँ। मैं आत्मा इस शरीर द्वारा यह कर्म कराने वाली हूँ। आत्मा करावनहार और शरीर करनहार है। जैसे हम कहते हैं ना बाबा हमारा करावनहार है और हम करनहार है ऐसे आत्मा भी करावनहार है और शरीर करनहार है। यह विस्मृति हो गई है, शरीर और आत्मा को हमने मिला दिया है। अभी अभ्यास करो मैं अलग हूँ और कराने वाली हूँ - यह स्मृति आना ही ज्ञान है। और जब तक यह ज्ञान नहीं होगा तो ज्ञान के बिना योग नहीं लगता है। पहले अपने को आत्मा ही निश्चय नहीं किया है तो परमात्मा से योग कहाँ से लगेगा? आत्मा का ही तो कनेक्शन परमात्मा से है ना। शरीर का कनेक्शन शरीर के सम्बन्धों से है, आत्मा का कनेक्शन परमात्मा से है तो पहले आत्म-अभिमानि ही

नहीं बने तो परमात्म-अभिमानि कैसे बनेंगे। पहला फाउण्डेशन है - आत्म-अभिमानि बनो। आत्मा मालिक बनकर शरीर से कर्म कराओ फिर परमात्मा पिता की याद रहेगी। आत्मा का कनेक्शन किससे है? आत्मा का कोई माँ-बाप, चाचा-काका है क्या! देह के सम्बन्ध हैं, पदार्थ हैं जो खींचते हैं, वह देह के लिए हैं ना। आत्मा को तो कोई पदार्थ की जरूरत नहीं तो देह-भान में आने से बाबा की याद नहीं आ सकती है। आत्म-अभिमानि बनने से सिवाए बाप के और किसकी याद आ नहीं सकती है। इसलिए हर मुरली में कितने बार बाबा के यह शब्द आते हैं बच्चे अपने को आत्मा समझ मुझ बाप को याद करो।

तो पहले आत्म-अभिमानि का फाउण्डेशन पक्का है? है बॉडी कॉन्सेस और कोशिश कर रहे हैं बाबा की याद में बैठें। शरीर का बाबा वह है ही नहीं तो याद कैसे आयेगा। आत्मा का ही कनेक्शन है इसलिए पहले जिसका यह आत्म-अभिमानि बनने का अभ्यास पक्का होगा, उसका योग स्वतः सहज लगेगा। तो यह चेकिंग करो और चेन्ज करो। चेन्ज करते-करते फिर निरन्तर हो जायेगा तो इसको कहा जाता है योगी जीवन। दो घण्टे के योगी नहीं, समझो आपने दो घण्टा योग लगा लिया और बाकी 22 घण्टे का क्या हुआ? शरीर (देहभान) के वश ही हो गये ना। इसीलिए बाबा कहते हैं योगी जीवन बनाओ। योग हमारा नैचुरल हो जाये। अच्छा।

“सेन्सीटिव नेचर छोड़ो, इनोसेन्ट बनो ”

(दादी जानकी 15-8-04)

सेन्सीटिव नेचर दो प्रकार की है, एक पाजिटिव रूप में लेवें तो बहुत जल्दी आगे बढ़ सकते हैं। दूसरा - सेन्सीटिव नेचर कई बार बहुत दुःख देती है, सेन्सीटिव नेचर वाले जल्दी उतावले हो जायेंगे। किसी के भाव को भी नहीं समझेंगे। उनमें धीरज नहीं रहता। समझने की कोशिश भी नहीं करते इससे बहुत नुकसान हो जाता है। अभी उसे परिवर्तन करना है। किसी भी बात में सिद्ध करने की कोई जरूरत नहीं है।

ज्ञानी योगी तू आत्मा का वास्तव में चिन्ह यह है जो सेकण्ड में वायब्रेशन से भी डिटैच कर लेवे, इशारे से कैच कर लेवे। जैसे वायरलेस कैच कर लेता है, अजब लगता है आवाज अन्दर घुस जाता है। ऐसे ही जितना हम साइलेन्स में जाते हैं, बुद्धि महीन होती जाती है जो और कोई वायब्रेशन अन्दर घुस नहीं सकते। कोई की कैसी भी भावना हो, वह अन्दर टच नहीं कर सकती। इसके लिए बुद्धि इतनी स्वच्छ, साफ, क्लीन हो जो हर बात कैच कर सके। दिन प्रतिदिन समय ऐसा आ रहा है, बाबा के दिल में जो हमारे प्रति हो, वो सेकण्ड में कैच कर लेवें। दूसरा - एक दो की भावनाओं को भी

कैच कर लेवें। सबके प्रति शुभ भावना, कल्याण की भावना रहे। भले उनके अन्दर कुछ और भी हो, परन्तु मेरी कल्याण की भावना रहे, ऐसी हमारी नेचर हो जाए।

तीसरा - सेवा में आत्माओं को जो चाहिए वो फट से मिलता जाए। जो चीज़ साइंस से निकलती है वो चीज़ सिर्फ उसके लिये थोड़ेही है, वो सबके लिये यूज हो जाती है। ऐसे हमारे सारे ब्राह्मण परिवार में हो जाए तो बड़ा अच्छा हो जायेगा। कोई भी बात में किसी भी घड़ी, किसी के साथ भी यह ख्याल नहीं होता है कि कहुँ या ना कहुँ? पता नहीं क्या रियेक्शन होगा... तो यह जो ख्याल होता है ना, यह भी तो एक प्रकार का साधारण वा व्यर्थ ख्याल है। इससे भी फ्री हो जाये तो ख्याल श्रेष्ठ और कामलायक होंगे। इसमें एक तो याद में रहो, दूसरा सर्विस में आपस में सहयोग हो, उससे बाहर वाले लोग भी मानेंगे, यह गैरन्टी है। जैसे हमारे में मनाने की, मानने की शक्ति वा अक्ल आई है ना, वैसे उनमें भी आयेगी। अभी कारोबार में कहाँ पर भी किसके साथ भी आप बात करेंगे तो आपको यह प्रूफ मिलेगा। समझो मैं प्यार से समझ से स्वीकार

किया, मुझे कोई क्वेश्चन नहीं है। तो दूसरे भी कुदरती कहते हैं मेरे अन्दर कोई क्वेश्चन नहीं है। समझ वाली बात लगती है, कोई ऐसी बात ही नहीं है जो क्वेश्चन उठाऊं।

हिम्मत, सत्यता और विश्वास तीनों एक जैसे हों। हिम्मत है लेकिन सत्यता की थोड़ी कमी है। सत्यता है तो हिम्मत की कमी है। हिम्मत और सत्यता है तो आत्म-विश्वास या बाबा में विश्वास नहीं है। लेकिन जब तीनों एकदम पॉवर में हो जाते हैं, तो यह लाइफ अच्छी लगती है। चलो अपने में विश्वास नहीं है, तो बाबा करेगा यह तो विश्वास का आवाज हो। तो तीनों इकट्ठे होने से सब सहज हो जाता है, कोई बड़ी बात नहीं है। हुआ ही पड़ा है। तो यह एक हमारा अन्दर सोचने का तरीका जैसा होगा, हमारे बोल जैसे होंगे, उसमें सत्यता और विश्वास काम करेगा। आजकल बहुत सोचने की आवश्यकता नहीं है, रखो भगवान पर, करने वाला बैठा है। तो अन्दर से अभी सेन्सीटिव नेचर को छोड़के इस तरह से बनो। तो क्वीक पुरुषार्थ करके सफलता को पाओ और दूसरों को भी सफलता देने में मदद करो। तो सदा सफलता देख कहेंगे कि यह मेरा भाग्य है। पुरुषार्थ करके भाग्यवान बने तो जरूर सफलता मिलेगी। ऐसे नहीं जो भाग्य में होगा... नहीं। तो सोचने के तरीके को बड़ा अच्छा रॉयल, सुन्दर बनाना है।

बाबा का चेहरा देखो कितना मीठा, कितना भोला एकदम मोह लेगा, हमारा चेहरा भी ऐसा कैसे बनें! जैसे छोटा बच्चा बिल्कुल इनोसेन्ट है एकदम प्युअर यानि शुद्ध है, परन्तु यह तो पता है कि इसके संस्कार तो पूर्व जन्म के हैं। भले छोटा किशोर है, बच्चा है.. उसको क्या पता काम, क्रोध क्या होता है? विकार कैसा होता? बच्चा ब्रह्म ज्ञानी समान है। परन्तु पिछले संस्कार तो उसमें भी हैं ना। हम जब बोलते हैं कि मैं ईश्वरीय सन्तान हूँ, भोलेनाथ बाबा की बच्ची/बच्चा हूँ, तो वो रूप ऐसा भोला बन जाता है। नहीं बनता है तो बन जाना चाहिए। वो पुराना सब गया, इसकी हूँ... तो जैसे वो है, ऐसे भोलेपन में सयानापन बहुत है। भोलेपन में रॉयल्टी बहुत है। कई भोले होते हैं परन्तु रॉयल नहीं होते हैं, खाने-पीने की भी रॉयल्टी नहीं होती। लेकिन भोलापन सत्यता, रूहानियत, स्नेह, प्यार, सच्चाई... जैसे सबमें सम्पन्न बना देता है। तो अभी ज्ञान, योग, धारणा, सेवा

सब आत्मा के अन्दर शक्ति भरी है। दूसरी तरफ जहाँ से भरी है, उन जैसे संस्कार भी बनते जा रहे हैं। उसमें इतनी प्यार भरी शक्ति है जो जरूरत नहीं है हमको ज्यादा बुद्धि लड़ाने की, चलाने की।

योगबल क्या चीज है? प्रैक्टिकल हरेक देखे जितना हम बाबा को याद करते हैं, उतनी सहनशीलता है? उतना समेटने की, सामना करने की शक्ति है? तो यह क्या है, अगर आई तो यह योगबल है ना। शक्ति सामना कर लेती है, हम तो याद में रहेंगे बाकी तो हम कुछ नहीं करते हैं। हमको बाबा ने एक मंत्र दे दिया तुम बच्चे याद करो। फिर यह नहीं कहेंगे मुझे सहन करना पड़ता है। क्या सहन करना पड़ता है? चलो, इसका स्वभाव थोड़ा ऐसा है, तो इसमें सहन की क्या बात है! आज नहीं, कल ठीक हो जायेगा, कोई बड़ी बात नहीं है। अगर मैं सोचूँ इसका बड़ा तेज स्वभाव है, बड़ा वो है यह है, जब याद में बैठते हैं, इस प्रकार से संकल्प चलने लगे कि इसको मैं 10 साल से जानता हूँ, यह न कभी परिवर्तन हुआ है, न होगा... अगर यह सोचा तो सहन करना पड़ता है, इसलिये सोचो ही नहीं ज्यादा, तो यह अक्ल है ना। मैं याद में रहूँ, शान्त रहूँ, प्रेम में रहूँ तो वो भी नेचर चेन्ज हो जायेगी। बाकी मैं ही परेशान हो जाऊँ, तो न मैं परेशान होना छोड़ती हूँ न वो छोड़ता है। तो हम कभी फालतू सोचते हैं परन्तु है कुछ भी नहीं। तो जब हम याद में रहते हैं तो हमको परेशानी नहीं है, खुद के लिये उतना समय तो अच्छा हो गया, फायदा हो गया; दूसरा वह बदल गया तो उसको भी फायदा हो गया। तो याद की शक्ति बढ़े कैसे? अपने को व्यर्थ संकल्पों से फ्री रखो, तो सब शक्तियाँ काम करेंगी।

हम अपना काम शुभ भावना, सकारात्मक सोचने का करें तो वो कभी भी चेन्ज हो जायेगा, उसमें हम क्यों सोचें। पर यह विश्वास जरूर हो कि एक घड़ी जरूर आयेगी। उसमें यह भक्ति वाला मिसाल याद रखना चाहिए। तपस्या करते रहो, कभी तुम्हें भगवान मिल जायेगा। कितने समय के बाद मिलेगा, वह पता नहीं है। लेकिन कुछ किया और सामने भगवान खड़ा हो गया, ऐसे कभी होता है लेकिन इतनी भावना तो रखो, तो हो ही जायेगा। कब होगा, कब होगा... ऐसा सोचते रहेंगे तो कभी भी नहीं होगा। इसलिये सिर्फ इसमें थकना नहीं है। अच्छा - ओम् शान्ति।

कार्यशाला – (आपसी रूहरिहान)

विषय :- त्याग तपस्या ही सफलता का आधार है

1. त्याग की परिभाषा क्या है?

- कुछ पाने के लिए कुछ खोना पड़ता है इसको ही त्याग कहते हैं।
- अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए जो बाधक हैं जैसे अपनी कोई मन पसन्द आदत है, वस्तु हो या कुछ भी हो उसे त्याग कहा जाता है।
- त्याग का भी त्याग करना ही सबसे ऊंचा त्याग है।
- त्याग माना सदा के लिए त्याग, फिर वापस न लेना सच्चा त्याग है।

- त्याग करके वर्णन न करना भी त्याग है।
- त्याग तीन प्रकार का होता है -
 1. सतो त्याग - स्वइच्छा से त्याग
 2. रजो त्याग - किसी के कहने पर त्याग
 3. तमो त्याग - मजबूरी से त्याग

त्याग किन किन बातों का होना चाहिए ?

1. देह अभिमान का त्याग
2. वस्तु वैभव का त्याग
3. मान-शान का त्याग
4. संग्रह वृत्ति का त्याग
5. अपनी पसन्दगी का त्याग
6. मनमत का त्याग आदि ... आदि.....

तपस्या की परिभाषा क्या है?

1. श्रेष्ठ लक्ष्य को दृढ़तापूर्वक हांसिल करने के लिए किया गया परिश्रम या साधना या अभ्यास को ही तपस्या कहा जाता है।
2. एक के अंत में खोना ही तपस्या है।
3. तपस्या माना स्व-परिवर्तन
4. तपस्या माना सर्व बन्धनों से मुक्त रहना
5. तपस्या माना अपनी आन्तरिक स्थिति को पावरफुल बनाना।
6. दधीच ऋषि मिसल यज्ञ में हड्डी-हड्डी स्वाहा करना ही तपस्या है।
7. तेरे-मेरे, वस्तु-वैभव, व्यक्ति आदि के आकर्षण से परे रहना ही तपस्या है।
8. विदेही बनने का अभ्यास करना ही तपस्या है।
9. ईमानदारी से जिम्मेदारी को निभाना भी तपस्या है।
10. "जैसा कर्म मैं करुंगा मुझे देख और करेगे" यह बात याद रखते हुए कर्म करते जाना ही तपस्या है।
11. कहावत है सच जैसा तप नहीं, झूठ जैसा पाप, नहीं तो जीवन भर सच्चाई की राह पर चलते जाना भी तपस्या है।
12. आज्ञाकारी - वफादार होकर रहना भी तपस्या है।
13. सहन करना भी तपस्या है।
14. नियम संयम युक्त जीवन भी तपस्या है।
15. किसी भी हालत में मर्यादाओं की लकीर को उल्लंघन न करना भी तपस्या है।
16. कर्मेन्द्रियों को शीतल शान्त बनाना भी तपस्या है।
17. पावरफुल ब्रेक लगाना भी तपस्या है।
18. तपस्या माना व्यक्तित्व में निखार आना।
19. तपस्या माना बीती को बिन्दी लगाना।

सफलता की परिभाषा :-

1. अपने लक्ष्य को विधिपूर्वक प्राप्त करना ही सफलता है।
2. श्रेष्ठ इच्छाओं की पूर्ति ही सफलता है।
3. संतुष्टता के तीनों सर्टिफिकेट प्राप्त हो, इसको भी सफलता कहा जाता है।
4. जिस कार्य से वैल्यूज की प्राप्ति होती है, उसे भी सफलता कहा जाता है।
5. जिस कार्य से सर्व का कल्याण होता है, ऐसा कार्य करना भी सफलता है।

6. ऐसा कर्म करना जिससे सर्व की दुआयें मिले, उसे भी सफलता कहा जाता है।
7. मन-वचन-कर्म तीनों समान किया हुआ कर्म सफल कर्म है।
8. प्रेरणादायक कर्म करना भी सफलता प्राप्त करना है।

त्याग और तपस्या का आपस में सम्बन्ध -

1. त्याग बिना तपस्या नहीं।
2. त्याग से भाग्य बनता है।
3. त्याग से बेहद की वैराग्य वृत्ति वा उपराम वृत्ति आती है जिससे तपस्या सफल होती है।
4. जैसे नींद का त्याग करें तो हम योग कर सकते हैं, जैसे चटपटा भोजन वा अधिक भारी भोजन का त्याग करें तो हम अमृतवेले अच्छी तपस्या कर सकते हैं।
5. त्याग से निःस्वार्थ वृत्ति आती है।
6. त्याग से इच्छायें कम होती है।
7. त्याग से विशाल दिल बनती है, और संकीर्णता से ऊपर उठते हैं।
8. त्याग से कन्दोलिंग और रुलिंग पावर आती है जो तपस्या के लिए नींव है।
9. त्याग से संगठन मजबूत होता है, स्नेह और सहयोग का वातावरण बनता है जिससे तपस्या का वातावरण पावरफुल होता है।
10. त्याग जहाँ हमें न्यारा बनना सिखाता वहाँ हर परिस्थिति में स्वयं को मोल्ड होना भी सिखाता जिससे तपस्या अटूट हो सकती है।
11. त्याग से दृढ़ता आती है और दृढ़ता ही तपस्या का आधार है।
12. त्याग वाले के व्यर्थ संकल्प कम चलते हैं जिससे तपस्या के लिए जो एकाग्रता जरूरी है वह आती है।

त्याग तपस्या से सफलता कैसे मिलती है :-

1. त्यागी और तपस्वी की बातों को सब दिल से ग्रहण करते हैं।
2. त्यागी और तपस्वी के अपने पुराने संस्कार बिल्कुल मिट जाते हैं और संगठन में हर परिस्थिति में वह अचल अडोल रहते हैं जिससे सफलता मिलती है।
3. त्याग-तपस्या से प्रकृतिजीत, मायाजीत बनते हैं।
4. त्याग-तपस्या से अपकारियों के ऊपर भी उपकार करने की शक्ति आती है तो सेवा में सफलता आती है।
5. त्याग-तपस्या से हम बेहद में चले जाते हैं, कर्मेन्द्रियां शीतल हो जाती हैं, हमारा व्यक्तित्व प्रभावशाली बनता है जिससे सहज सफलता मिलती है।
6. त्याग-तपस्या के आधार पर हम डबल लाइट रहते हैं जिससे कार्य कुशलता आती है जिससे सहज सफलता मिलती है।
7. त्याग-तपस्या के आधार पर ही बाबा की प्रत्यक्षता हो सकती है।
8. त्याग-तपस्या के आधार से वातावरण की शुद्धि होती है।
9. त्याग-तपस्या के आधार पर ही हम मास्टर सर्वशक्तिमान बनते हैं जिससे हम सम्पूर्ण विजयी बन सकते हैं।

“सम्पूर्ण ट्रस्टी वा समर्पित जीवन - दादी जी की नजरों में”

1) सम्पूर्ण पक्का ट्रस्टी वह है जो कहता है यह तन-मन-धन सब तेरा, जब तेरा कह दिया तो उसमें जरा भी मेरापन न आये। जो जितना देता है उसे उतनी शक्ति मिलती है। अगर यह तन बाबा का है मैं ट्रस्टी हूँ, संकल्प भी बाबा का है तो चेक करना है कि व्यर्थ संकल्पों को कन्ट्रोल करने की शक्ति है? अगर अपने संकल्पों पर ही कन्ट्रोल नहीं तो उसे ट्रस्टी वा समर्पित कैसे कह सकते!

2) जो पक्का ट्रस्टी है उसके पास व्यर्थ आ नहीं सकता। जब व्यर्थ नहीं है तो सबके साथ समान स्नेह है और जहाँ स्नेह है वहाँ न किसी के प्रति वैर है, न विरोध है। न राग है, न द्वेष है। जब मेरा किसी से विरोध नहीं तो मेरे से भी किसी का विरोध नहीं। अगर सर्व से स्नेह है तो सब शिकायतें समाप्त हो जाती हैं।

3) ट्रस्टी कभी अमानत में ख्यानत नहीं कर सकते। उनका न अपना कोई संसार है, न वे संसारी हैं। उनके दिल में रहता यह संसार बाबा का है, मैं भी बाबा का हूँ। वे किसी भी परिस्थिति में मूँझते नहीं। कभी तेरे मेरे में नहीं आते।

4) ट्रस्टी कभी हार कभी जीत के खेल में समय नहीं गंवाते। जो इसी खेल में रहते उन्हें संकल्पों विकल्पों की दुनिया में नाचना पड़ता। उतरने चढ़ने में ही समय चला जाता। परन्तु जब निश्चय हो जाता हम बाबा के, बाबा हमारा तो न मैं गृहस्थी हूँ, न मेरी प्रवृत्ति है। मुझे आकर्षण करने वाला, मुझे श्रृंगारने वाला एक मेरा बाबा है।

5) जो ट्रस्टी होकर रहते हैं वे स्वयं को विश्व कल्याण की सेवा पर स्वयं को देखते। उनकी बुद्धि में रहता कि हमारी यह जिन्दगी केवल बाबा की सेवा के निमित्त है। हम गाडली सर्विस पर हैं। हम यहाँ खाने-पीने मौज करने के लिए नहीं जिंदा हैं, यह अन्तिम समय है ही विश्व कल्याण की सेवा के लिए इसलिए अपना समय, संकल्प और सम्पत्ति तीनों खुद के लिए नहीं हैं परन्तु खुदा के लिए हैं। खुद के लिए खायेगे तो आसक्ति जायेगी। हम खुदा की सेवा के लिए इस घोड़े को घास देते हैं। जब बुद्धि में रहता संसार हमारा बाबा है, जो भी है सब बाबा के लिए है तो बुद्धि की लाइन क्लीयर हो जाती है।

6) जो सम्पूर्ण ट्रस्टी हैं, समर्पित हैं, उस पर सर्व की दुआयें हैं, बाबा की दुआये हैं। कोई मुझे दुआ के बदले बददुआ न दे, जिसके सिर पर सबकी दुआयें हैं वही अमर है। दुआयें तब मिलती हैं जब सबके प्रति रहम और स्नेह है। बददुआ तब मिलती जब नफरत है।

7) अगर कोई प्रवृत्ति में रहते पक्का ट्रस्टी है तो वह विश्व के आगे सैम्पुल है। वह सैम्पुल अपनी सुन्दरता से सृष्टि को आकर्षित करता है। समाज के कितने भी सवाल सामने आये, लेकिन जो शक्तिशाली है उसके सब सवाल स्टॉप हो जाते। हमें सब सवालों को समेटकर बिन्दी लगाना है। अगर क्या, क्यों करते रहेंगे तो विश्व कल्याण के निमित्त कैसे बनेंगे।

8) जो समर्पित हैं उसे किसी भी प्रकार का अभिमान आ नहीं सकता। जिसमें अभिमान है उसे अपमान जल्दी फील होता है। मानो किसी ने मुझे स्नेह नहीं दिया तो व्यर्थ संकल्प चलते हैं, तो क्या मैं

बाबा को समर्पित हुई? किसी आत्मा का स्नेह मैं क्यों मागूँ? बाबा कहता तुम मेरे से स्नेह करो तो तेरे से सब स्नेह करेंगे। अगर मैं आत्मा से स्नेह मांगती तो मैं बाबा को समर्पित कैसे हुई! ट्रस्टी कैसे कहला सकती?

9) कोई ने मुझे बुरा भला बोला, मेरी स्थिति उस समय एकरस नहीं रही तो एक तो बाबा की आज्ञा का उल्लंघन किया दूसरा जो बाबा ने एक से रस लेने की श्रीमत दी है, जो हमें अतीन्द्रिय सुख का रस लेना है वह भी नहीं ले सकी। एकरस स्थिति नहीं तो बाहरमुखता के रस में रहते। अगर मुझे बाहरमुखता के रस आकर्षित करते हैं तो मैं समर्पित कैसे हुई?

10) जो समर्पित है उनके इन दोनों नयनों में बाप और दादा बसता है। अगर बाबा के सिवाए कुछ भी तेरा मेरा इन नयनों में बसता है तो क्या मैं समर्पित हुई? अगर दूसरा कोई भी मेरे नयनों में बसता है तो क्या वरदाता के वरदानों का अनुभव कर सकेंगे! योग लगेगा? अगर योग में मेहनत लगती तो उसे ट्रस्टी कैसे कहेंगे!

11) जो समर्पित है वह सदा खुशानसीब है, वह खुशी में रहता और खुशी का खजाना बांटता है। अगर कोई कहे मुझे खुशी नहीं रहती तो जरूर अन्दर कोई चोर बैठा है। वृत्ति दृष्टि में एक बाबा को न बिठाकर देहधारी को बिठाया है तो समर्पित वा ट्रस्टी कैसे कहेंगे!

12) समर्पित माना - मेरा तो एक बाबा दूसरा न कोई। जब दुनिया में एक बाबा के सिवाए दूसरा कोई नहीं तो फिर आकर्षण किसकी! कौन सी उसमें ऐसी विशेषता है जो वह मुझे आकर्षित करता है। बाबा से अधिक कौन सी शक्ति है जो मुझे आकर्षित करती है? किसी की भी आकर्षण है तो उसे समर्पित कैसे कहेंगे!

13) समर्पित माना विश्व कल्याण की जिम्मेवारी के ताजधारी। जिम्मेवार आत्मायें कभी यह नहीं कह सकती कि क्या करें, मेरी दृष्टि वृत्ति खराब होती है। विश्व का कल्याण करने वाले अगर अपने लिए ही गदा या तलवार चलाते रहेंगे, युद्ध करते रहेंगे तो विश्व का कल्याण कैसे होगा! इसलिए समर्पित माना बेहद के वैरागी, न किसी से राग है, न किसी से द्वेष। सदा ज्ञान के नशे में मस्त।

14) समर्पित माना शीतल काया वाले योगी। उन्हें कभी क्रोध आ नहीं सकता। अगर कभी सेकण्ड के लिए क्रोध आ भी जाए तो 'सॉरी' कर लो, उसी समय खत्म हो जायेगा। परन्तु देही-अभिमानि बनकर बोलने की शक्ति चाहिए। आगे वाला चिड़चिड़ाये तो तुम शान्ति की शक्ति को धारण कर लो, चुप रहो तो दो हाथ की ताली नहीं बजेगी।

15- समर्पित हो गये माना हमने युद्ध का मैदान छोड़ दिया, कोई कहे अभी तक मेरी युद्ध चलती तो वह सम्पन्न कब बनेंगे! अब हमारा महाभारत पूरा हुआ। हमें तो बाबा ने अब यही पाठ दिया है - “नष्टोमोहा स्मृतिर्लब्धा”। जब युद्ध पूरी हो तब ठका हो, जब हमारा लंगर उठ गया, हमारा स्टीम्बर चल दिया। तो पीछे मुड़कर क्या देखना! अच्छा - ओम् शान्ति।